प्रस्ताव २०१६

दया का साहस

२०१५ तक के दौरे,

वर्ष २०१५ में हमने स्वयं में एक्य भाव लाने के कई तरीके ढूंढे|आज के दौर में यह बहुत ज़रूरी है|पृथ्वी के पार संकट के नए रूपों -प्रवासी पारिस्थितिक और सामाजिक-विभिन्न धर्मों के विश्वासियों और गैरविश्वसियों के लिए यह जैसे एक चुनौती है|सशस्त्र हिंसा कहर विध्वंस है अमानवीय विचारधारा के नाम पर|जबकि अध्यक्षता में स्पष्ट शेष,हम जारी करेंगे हमारे विश्वास की तीर्थयात्रा|आशंका उत्पन्न कर विरोध करने के तरीके के रूप में असुरक्षा के द्वारा|यह भी अधिक ज़रूरी है कि जो लोग बढ़ने के लिए देख रहें है,या जीवंत मनुष्य-एकजुटता के वैश्वीकरण ,एक दूसरे का समर्थन ज़रूरी है|जब तूफ़ान उठता है एक घर जो पत्थरों का बना होता है वह स्थिर ही रहता है|हम अपने जीवन का आधार ईसा-मसीह को बनाना चाहते उन्ही के शब्दों का उच्चारण कर|इस प्रकार हमारे पत्थरों के कुछ बुनियादी सुसमाचार वारतविकताओं से मिलकर करेंगे सभी के लिए सुलभ :ख़ुशी,सादगी ,दया|भाई रोजेर्स ने यह आभा हमारे तैज़ समुदाय के जीवन में सहेजे रखने का प्रयास किया है|कठिन समय में भी वे उसे सहेजे रखने में सक्षम हुए है|वे उन्हें पूर्ण रूप से ग्रहण कर लेते है ताकि हर दिन के अंत में वे फिर से उसे आत्मसाध कर सके|ये तीन शब्द हमें हमारी जीवन यात्रा के अगले तीन वर्षों के लिए निर्देशित करते हैं|२०१६ में हमें दया के साथ यात्रा शुरू करनी चाहिए ठीक उसी भावना के साथ जैसा कि दयारूपी वर्ष फ्रांसीसी पोप के द्वारा शुरू किया गया था|

सुसमाचार कहता है कि हमें भगवान कि दया के लिए एक गवाह होना चाहिए|यहाँ पाँच प्रस्ताव है जो हमें दया का सहस जगाने में सहायता करता है|

पहला प्रस्ताव-

स्वयं को उस ईश्वर को सौंपना जो दया का सागर कहलाता है|

तुम ईश्वर हो जो क्षमा करता है|सुन्दर और दयालु ईश्वर,तुम सब्र और प्रेम की मूर्ति हो|

ऐसे दयालु बनो जैसे तुम्हारे पिता दयालु है|(लुक (६:३६)

बाइबिल के अनुसार दया ही ईश्वर है,दूसर शब्दों में करुणा और दया|दृष्टान्त कहते हुए एक पिता और उसके दो बेटे (लुक १५)ईसा मसीह हमे यह दर्शाते हैं कि भगवान का प्यार इस बात पर निर्भर नही करता कि हम किसी के लिए कितना अच्छा कर सकते हैं उनका प्रेम तो बिना किसी शर्त के होता है|पिता अपने उस पुत्र को प्रेम करता है जो सारी उम्र वफ़ादार रहता है|वह उस पुत्र के लिए भी अपनी बाँहे सदा सहायता के लिए बढाए रखता है जो उससे दूर है|

ईश्वर ने केवल मानवता की भलाई के बारे में सोचा है|इस कारण आप ईश्वर के करीब तभी होंगे जब आप अच्छाइयों का अधिग्रहण करेंगे|ईसा मसीह के साथ हमारा तादात्म्य तभी स्थापित होगा जब हम दया रुपी हृदय और करुणा का भाव अपनाएंगे|ईश्वर का प्रेम एक क्षण के लिए नही अपितु ज़िंदगी की आखिरी साँस तक हमारे साथ रहता है|अपने अंदर करुणा का भाव जगाकर हम ईश्वर के प्रेम का प्रतिबिम्ब हो सकते हैं|एक ईसाई होने के नाते हम दूसरे धर्मों में विश्वास रखने वाले लोगों से यह यह प्रार्थना है कि दया और करुणा का भाव हमारे जीवन में संलग्न करें|

आइए,मिलकर स्वागत करें ईश्वर के प्रेम का वे कभी भी अपने हृदय का दरवाज़ा हमारे लिए बंद नही करता| जब भी हमारी गलतियाँ हमारे ठोकर लगने का कारण बंटी है तब ईश्वर का हम पर विश्वास और प्रेम ही हमारा सुरक्षाकवच बनता है|यदि हम ईश्वर से विमुख होते हैं उसके बाद भी ईश्वर के पास दोबारा जाने से हमें डरना नही चाहिए|उन पर से हमारा विशवास कभी भी डगमगाना नही चाहिए|ईश्वर सदैव अपने बंदों से मिलने आते हैं|हमें प्रार्थना को एक परिश्रम के रूप में नही बल्कि अपेक्षाकृत एक ऐसे रूप में देखना होगा जब हम आँखें बंद कर ईश्वरीय प्रेम से भर जाती है जो हमें दया रूपी जीवन जारी रखने के लिए सक्षम बनाता है|

द्वितीय प्रस्ताव

क्षमा बार बार

हमें अपने अंदर दया,करुणा,विनम्रता,और धैर्य जैसे गुणों को आत्मसात करना होगा|एक दूसरे के साथ को ग्रहण करो और एक दूसरे को क्षमा करना सीखो|यदि आप में से किसी को भी एक दूसरे के खिलाफ शिकायत हो तो क्षमा करना सीखें|जिस प्रकार ईश्वर हमें क्षमा करते हैं ठीक उसी प्रकार|

पीटर ईसा मसीह के पास आया और पूछा “हे प्रभु मैं अपने भाइयों और बहनों को कितनी बार माफ़ करूँ जो मेरे खिलाफ़ साज़िश करते हैं”|”ज्यादा से ज्यादा सात बार”| ईसा मसीह ने कहा|”मैं कहता हूँ सात बार नही,सत्तर बार और सात बार|”

ईश्वर का क्षम्य करना कभी विफल नही होता|अपने जीवनकाल में यहाँ तक की स्वयं पर कील ठोके जाने पर भी उन्होंने केवल क्षमादान किया,नाकि किसी कि निन्दा की |

यह जानकर कि हमें क्षमा कर दिया गया है और अपनी बारी आने पर हमें भी क्षमादान करना होगा यह अहसास ही रोम-रोम में उल्लास भर देता है|यह हमारे अंदर एक आतंरिक शांति का स्त्रोत बनकर बहता है जो प्रभु का आशीर्वाद है|भाई राजर के अनुसार गिरजा एक ऐसा स्थान है जहाँ ईसा मसीह से प्रेम करने वाले लोग इकट्ठा होकर अपने अंदर उनके गुण जैसे दया,करुणा आदि ग्रहण करते हैं|गिरजा हमारे सभी कष्टों को हर लेता है|समुदायी प्यार,दया,आराम और एक स्पष्ट प्रतिबिम्ब के रूप में हम ईश्वर की रचना है|

ईश्वर द्वारा दिए गए क्षमा करने के सन्देश की तुलना हम बुराई और अन्याय के साथ नही कर सकते|इसके विपरीत,यह हमें अपनी गलतियों और आस पास हो रहे अन्याय से परिचित करवाता है|यह हम पर निर्भर करता है कि हम स्थिति को कितना सही बना सकते हैं|

चलिए हम क्षमा करना सीखे-चाहे सत्ततर बार क्यों न हो|अगर ज़ख्म गहरा हो,तो एक एक कदम क्षमा की तरफ बढ़ाना चाहिए|इससे पहले की हमारे अंदर किसी के लिए नफरत पले|

हम गिरजा को बिना किसी भेद भाव के दया के समुदाय के रूप में दर्शा सकते हैं|

अपना दिल बड़ा कर हमें क्षमा करना सीखना चाहिए और ज़रुरत मंदों की सहायता करनी चाहिए|

किसी ने ईसा मसीह से पूछा “मेरा पड़ोसी कौन है”?जवाब में ईसा मसीह ने कहा”एक व्यक्ति जेरुसलेम से जेरिको जा रहा था,अचानक डाकुओं ने उस पर हमला कर दिया|उन्होंने उसके कपड़ो तक को नही छोड़ा|उसे अधमरा छोड़कर वे भाग गए| उसी समय एक पादरी वहाँ से गुज़र रहे थे|उनकी नज़र उस व्यक्ति पर पड़ी,उन्होंने झट अपनी राह बदल ली|इसके बाद लेवी जनजाति का एक व्यक्ति भी वही से गुजरा उसकी नज़र भी उस व्यक्ति पर पड़ी,उसने भी ऐसा ही किया|कुछ समय बाद एक नेक आदमी वहाँ से गुज़र रहा था,घायल व्यक्ति को देखकर वह उसके पास आया और उस पर दया दिखाते हुए उसके ज़ख्मों पर तेल और अंगूर का रस

औलगाते हुए और उसकी मरहम पट्टी की|उस नेक दिल आदमी ने फिर उस घायल व्यक्ति को अपने गधे पर लादा और एक सराय ले गया ताकि वहाँ उसे आराम मिले और वह उसकी सेवा कर सके|अगले दिन उसने सराय के मालिक को दो दिनारी दिए और घायल व्यक्ति का ख्याल रखने को कहा|उसने यह भी कहा कि " अगर सराय के मालिक को अपनी ओर से पैसे खर्च करने पड़े तब वापस आने पर वह उसे पैसे लौटा देगा |"ईसा मसीह ने तब उस व्यक्ति से पुछा कि तुम्हारे अनुसार उपर्युक्त तीनों व्यक्तियों में से घायल व्यक्ति का पड़ोसी कौन था?व्यक्ति ने उत्तर दिया"वह व्यक्ति जिसने घायल व्यक्ति की सहायता की|ईसा मसीह ने कहा जाओ तुम भी उसके जैसा आचरण अपनाओ|

तीसरा प्रस्ताव

संकट की स्थिति में अकेले या कुछ अन्य के साथ

यदि तुम खुद को किसी भूखे और ज़रुरतमंद के लिए कुर्बान कर दो तब अँधेरे में भी तुम प्रकाशित होगे|

दया का चिन्ह ईसा मसीह को हमारी तरफ देखते एवं एक नेक दिल इंसान की कहानी कहते हुए दर्शाता है|एक नेक दिल इंसान ने किस प्रकार एक घायल व्यक्ति की सहायता की|

दया की भावना दुसरे के कष्टों को देखकर उनके लिए हमारे दिल के दरवाज़े खोलती है|यह भावना संकट में छुपे हुए प्रपत्रों,भौतिक जीवन की गरीबी,एक बच्चा जो बुरे समय से गुज़र रहा है,एक परिवार जो संकट में है,एक बेघर व्यक्ति,एक युवा जिसका जीवन निरर्थक है,एक व्यस्क आदमी या औरत जो अकेली है|ऐसे व्यक्ति जिन्हें न शिक्षा मिली और न कला या संस्कृति के क्षेत्र में उन्नत हो पाए|उन सब के प्रति भाव-विभोर करती है|

गरीब में स्वयं ईसा मसीह बसते हैं जो हमसे कहते हैं"मैं भूखा था और तुमने मुझे खाने को दिया"|(मैथ्यू २५)|ईसा मसीह सबकी तकलीफों को अपने अंदर समा लेते हैं|अच्छाइयों के साथ वह इस रहस्य को भी महसूस करते हैं जो जीवन की अंतिम

साँस तक बना रहता है|

जब कभी हम ज़ख़्मी हुए ईसा मसीह ही उन पर मरहम लगाते हैं|उनका हमें इस प्रकार स्नेह से देखना स्वयं उनकी सोच को दर्शाता है जो केवल मनुष्यता के हित के लिए सोचता है|कभी

कभी ऐसा लगता है मानों वे हमारे करीब हो बिलकुल उस नेक आदमी की तरह जिसने उस घायल इंसान की मदद की थी|

चलिए हम सब हिम्मत करते हैं और अकेले या फिर कुछ लोगों के साथ अच्छाई की राह पर चलें|दया भावनात्मक नही बल्कि माँगों से भरा है|इसकी कोई सीमा नही|कानून हर किसी के कर्त्तव्य की सीमा निर्धारित करता है परंतु दया कभी नही कहती “बहुत हो चूका मैंने अपना कार्य कर दिया”|

दया का चिन्ह

चतुर्थ प्रस्ताव
सामाजिक क्षेत्र में दया का विस्तार

मैं ईश्वर हूँ जो दयावान बनकर कार्य करता है|न्याय और सही गलत के बीच फर्क समझता है|

ईश्वर हर एक इंसान से इसी प्रकार के व्यवहार की उम्मीद करता है|

ईश्वर के दिल में हर एक इंसान मिलकर एक परिवार बनाता है|इस कारण दया का भाव सृष्टि के कोने कोने तक पहुँचता है|वैश्विक स्तर पर संकट ही वास्तविक सत्य होता है|यह अभेदिक है अंतराष्ट्रीय संस्था को मजबूत करने के लिए|लोकतान्त्रिक तरीके से अधिक से अधिक न्याय सुनिश्चित करने के लिए और शांति बनाये रखने के लिए नियम स्थापित करें|

गरीब देशों की गरीबी का कारण प्राय:शक्तिशाली राष्ट्र एवं निगमों और उनके संसाधनों के शोषण के कारण होते हैं|यह असंभव लगता है कि कि कभी इसमें बदलाव आ सके|हम पता कर सकते है कि न्याय बदल करने का एक तरीका है कुछ देने के लिए हमारा मन बड़ा होना चाहिए|आज के इस परिवेश में बाइबल हमें यह याद करवाता है कि अगर हमारा कोई परिजन गरीब हो जाए और और कष्टप्रद जीवन जिए तब हमें उसकी मदद करनी चाहिए जैसे हम किसी अजनबी या विदेशी कि करते ताकि हमारे अंदर यह भावना सदैव जिंदा रहे|(लेवितिक्स२५:३५)

दुनिया के हर कोने में मर्दों,औरतों,बच्चों को अपना घर छोड़ने के लिए विवश किया जा रहा है|उनकी दुर्दशा देखकर मन भाव-विभोर हो जाता है|अमीर देशों को जागरूक होना ताकि वे इतिहास के ज़ख्मों के प्रति अपनी जिम्मेदारियाँ समझेंगे|इतिहास के ज़ख्म विशेष रूप से अफ्रिका और मध्य पूर्वी देशों के प्रवासियों में देखे जाते हैं|

यह बहुत महत्वपूर्ण है कि हम महसूस करें कि शरणार्थियों और प्रवासियों को किन मुसीबतों से गुज़ारना पड़ता है|यह सकारात्मक मौका हो सकता है|वे जो अमीर देशों के दरवाज़ों पर दस्तक देते है अपेक्षाकृत उनको प्रेरणा कहाँ से मिलती है जो संकट,तकलीफों में जीते हैं|क्या वे उनकी मदद नही करते नए जीवन के लाभ में |एक साथ इसका सामना करते हुए एक लहर के रूप में प्रस्तुत होना जो यूरोपीय

समुदाय के देशों को एक गतिशीलता प्रदान करे|

हमें ज़रुरत है कि हम अजनबियों के डर और सांस्कृतिक भेद भाव से ऊपर उठे|ऐसा डर सुबोध है|जो प्रवासियों की सहायता करते हैं कभी कभी वे भी पूर्ण रूप से नष्ट हो जाते हैं|डर कभी कम नही होगा|हालांकि ,खुद को दीवारों के पीछे रखकर अपेक्षाकृत वे लोग जिनको हम न जानते और न ही जिनके लिए हम कुछ करते हैं|क्या यह संभव नही कि हम एक दूसरे का स्वागत करें एक सदस्य एवं मानव परिवार के रूप में|

पाँचवा प्रस्ताव

पूरी सृष्टि के लिए दया का भाव

६ दिन अपने हर कार्य को मन लगाकर करो परंतु सातवे दिन काम मत करो,ताकि तुम्हारे बैल और गढ़े को आराम मिल सके (एक्सोडस२३:१२)

६ सालों के लिए तुम अपने खेतों में बीज डालो और फसलों की कटाई करो लेकिन सातवे साल उसमें खेती मत करो एवं उसे अनुपयोगी रहने दो|

अपने समय की भाषा में,बाईबल हमें बताता है कि हमे हमारी करुणा पर्यावरण के लिए विस्तृत करनी चाहिए|सभी जीव-जंतुओं के प्रति सम्मान का भाव रखना चाहिए|मेसोपोटामिया का एक ईसाई लिखता है एक करूणापूर्ण मन कभी भी नही देख सकता इस सृष्टि में कोई उदास हो या फिर किसी के साथ कुछ बुरा हो|

पारिस्थितिक आपदा का प्रधान पीड़ित होता है सामान्य रूप से गरीब|जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से अपनी ज़मीनों एवं घरों को छोड़ने के लिए लोग मजबूर होते है|

यह पृथ्वी ईश्वर की बनाई हुई है |मनुष्य इसे एक उपहार के रूप में पाता है| हम मनुष्य कई जिम्मेदारियों के साथ इस धरती पर जन्म लेते हैं|हमारा यह कर्तव्य है कि हम इसकी देखभाल

करें न कि इसके संसाधनों को नष्ट करें|पृथ्वी सीमित है,मनुष्य को भी अपनी सीमा जाननी होगी|

पृथ्वी हमारा घर है और आज यह पीडाग्रस्त है|यह पर्यावरण अंतर को देखने में असमर्थ है|सभी जंतुओं का अदृश्य होना,जैव विविधता का खतरा,और भू मंडल के निश्चित हिस्सों का बड़े पैमाने पर वन की कटाई भी देखने में वह असमर्थ है|

हमलोग इस सम्पूर्ण सृष्टि के साथ अपनी एकजुटता कैसे व्यक्त कर सकते हैं?निर्णय करके या फिर अपने दैनिक जीवन को प्रभावित करके|हमारा गंभीर ध्यान हमारे क्रियाओं के द्वारा एक उपभोक्ता के रूप में,एक नागरिक के रूप में और अपनी जीवन शैली को साधारण बनाकर चिन्तायुक्त मुद्रा लेने में है|साधारण रूप से हमारे जीवन के रास्ते हमारी ख़ुशी के साधन बन सकते हैं|कुछ लोग तत्परता के साथ इस कार्य में लग जाते हैं जलवायु के लिए व्रत रखकर,और महीने के पहले दिन पर न्याय करके वे पर्यावरण की सुरक्षा करना चाहते हैं|ऐसे कदम उठाकर हम ईश्वर का हमारे प्रति दया का भाव दर्शाते हैं|पृथ्वी कोई विकल्प नही अपितु एक शर्त है खुशहाल ज़िंदगी जीने का|

आनेवाले कुछ महीनों में हम तेज़ वेबसाइट और सामाजिक संजाल पर प्रकाशित करेंगे प्रस्ताव २०१६ |आप हमारे साथ अपने विचार सांझे कर सकते हैं एकोज़@तेज़ और आप हमारे साथ उपर्युक्त पृष्ठ के आधार पर भी संपर्क बनाये रख सकते हैं|

तेज़ २०१६

पूरे वर्ष के दौरान

प्रत्येक सप्ताह,एक रविवार से दूसरे रविवार तक युवाओं कि सभा होती है|विश्वास के अच्छे वसंत पर जाने के लिए हमारी ईश्वर के दया भाव पर गहरा चिंतन करने के लिए| हमें साक्षी होना होगा ईश्वर के दया भाव को जानने के लिए|

अगस्त २८ से सितम्बर ४

एक सप्ताह १८ से ३५ साल के युवकों और व्यस्कों के लिए|जहाँ छात्र,युवा पेशेवर स्वयं सेवी या जो लोग कार्य ढूंढ रहे हैं|वे लोग अपने जीवन के अनुभव बाँट कर भविष्य में उन्नत होने के तरीकों पर गौर कर सकते हैं|

बुचारेस्ट २०१६

कुछ भाइयों और १५० युवा जो विभिन्न देशों से सम्बन्ध रखते हो के साथ भाई अलोइस बुकारेस्ट जायेंगे २८ अप्रैल से १ मई तक|वहाँ वे ईस्टर मनाएंगे रोम के ईसाइयों के रिवाज़ के साथ|

यह तीर्थयात्रा इस्तांबुल ,मोस्को,मिन्स्क,कीव,और लविव(ईस्टर २०१५)

कोतोनोऊ २०१६

जोहन्नेस्बर्ग के बाद (१९९५)नैरोबी)और किगाली (२०१२),चौथी युवाओं की अंतर्राष्ट्रीय सभा अफ्रिका में होगी अगस्त ३१ से सितम्बर ४ तक|

यह नया मंच (विश्वास की तीर्थयात्रा पृथ्वी पर) कई हज़ारों युवाओं को एक साथ लायेगा|वे पाएंगे एक ऐसा अवसर जिसमें हम दूसरो की सहायता कर सके अफ्रिका के भविष्य रूप में|

यह सभा स्वागत करती है दूसरे प्रतिभागियों की जो अफ्रिका के दुसरे हिस्सों से है या इस विश्व के दूसरे देशों का जो इस महादेश के हिस्से को खोजेगा|

कोतोनौ की सभा उजागर करती है-अफ्रिका कि युवा पीढ़ी जो अपने अंदर मूल्यों को स्थापित करती है|

युरोपीन सभा २०१६-२०१७

वेलेंशिया में ३० दिसम्बर की शाम एक शहर जो आतिथ्य करेगा ३९ यूरोपियन सभा की घोषणा होगी,दिसम्बर २८ २०१६ से जनवरी १,२०१७ |

विभिन्न सभाओं की जानकारी के लिए देखे www,taize.fr

वेलेंशिया सभा के लिए संदेश प्राप्त किया जाएगा|

चर्च और अंतरराष्ट्रिय संस्था के प्रतिनिधि सन्देश भेजेंगे|यूरोपीय सभा में प्रतिभागी होने के लिए,विस्तृत जानकारी के लिए देखें:www.taize.fr